सकाम कर्म, निष्काम कर्म, कर्मफलत्याग एवं अकर्म कर्म

भूमिका

देहमें प्राण रहनेतक मनुष्यद्वारा कर्म होते ही हैं; किंबहुना उसे कर्म करने ही पडते हैं । अच्छे-बुरे कर्मोंका फल मनुष्यको मिलता ही है । कर्मयोगका आचरण करनेवाले मोक्षार्थीको कर्म इस प्रकार करने पडते हैं कि उसका फल ही न मिले; क्योंकि ऐसा कर्म कर्मफलके बन्धनमें नहीं अटकाता । ऐसे कर्म चरण-दर-चरण कैसे कर सकते हैं, इसका दिशानिर्देशन इस ग्रन्थमें किया है।

कर्मका प्रथम चरण है 'सकाम कर्म' । व्यावहारिक इच्छा, अपेक्षा, भावना आदि के कारण सामान्य मनुष्यद्वारा सकाम कर्म ही अधिक होते हैं। उपासकद्वारा भी प्रारम्भमें सकाम उपासना ही होती है । सकाम कर्मके कारण पाप अथवा पुण्य प्राप्त होता है एवं मनुष्य कर्मबन्धनमें अटकता है। सकाम कर्म करते हुए धीरे-धीरे कर्तापनकी भावना तथा फलकी अपेक्षा घटती जाती है एवं 'निष्काम कर्म' करना सम्भव होता है । यह कर्मका दूसरा चरण है । निष्काम कर्म दो प्रकारके होते हैं - मायाके निष्काम कर्म एवं अध्यात्मके निष्काम कर्म । मायाके निष्काम कर्मके कारण, उदा. जिसे आवश्यकता हो उसे दान देनेसे, पुण्य प्राप्त होता है । इसके विपरीत अध्यात्मके निष्काम कर्म मोक्षसाधनाके लिए किए जानेके कारण उनके द्वारा आध्यात्मिक उन्नति होकर पाप-पुण्यसे परे जा सकते हैं । मनुष्यको मायाके कर्म तो निरन्तर करने ही पडते हैं; ऐसेमें निष्काम भाव होनेपर भी वह इस पाप-पुण्यसे परे किस प्रकार जाए ? इसका उपचार है 'कर्मफलत्याग' करना, अर्थात कर्मका फल ईश्वरके चरणोंमें अर्पित करना । यह कर्मका तीसरा चरण है । यदि हम कर्म ही ऐसा करें, जिनकी कर्ममें गणना न हो,

तो उस कर्मका फल मिलने तथा उस फलका त्याग करनेका प्रश्न ही कहां उठता है ? ऐसा कर्म करनेपर भी न करने समान है । इसे ही 'अकर्म-कर्म' कहते हैं । यह कर्मका चौथा चरण है । यहां विशेषरूपसे ध्यान देनेयोग्य बिन्दु यह है कि नामधारकका नामजप अखण्ड होनेपर, वह सकाम कर्मसे सीधे अकर्म कर्ममें पहुंच सकता है ।

इस ग्रन्थमें दिए गए कर्मके चरण समझकर उनके अनुसार आचरण करनेवाला शीघ्र कर्मबन्धनसे मुक्त हो, अर्थात उसे मोक्षप्राप्ति हो, यही श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है ।

– संकलनकर्ता

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. कर्म एवं कर्मके परिणाम ११

२. कर्मफल १४

३. सकाम कर्म ३५

* व्यक्तिद्वारा सकाम कर्म ही अधिक होना ३५

४. निष्काम कर्म, कर्मफलत्याग एवं अकर्म कर्म की संज्ञाओंके विषयमें सम्भ्रम ३६

५. निष्काम कर्म ३७

६. कर्मफलत्याग ४६

७. अकर्म कर्म (ज्ञानोत्तर कर्म) ४८

८. कर्मयोगान्तर्गत चरण ६०